शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. X, No. 1, pp (197-205), Jan-March 2019

मेरठ जनपद के माध्यमिक स्तर पर अनुदानित अल्पसंख्यक एंव गैर अनुदानित अल्पसंख्यक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 निशा सिंह

प्राचार्या, मार्डन कालिज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,

मोहन नगर, गाजियाबाद

ईमेल- mcps.principal2011@gmail.com

सारांश

विद्यालय का शैक्षिक वातावरण बालक के व्यक्तित्व विकास में महती भूमिका निभाता है। माध्यमिक स्तर पर निजी क्षेत्र के और सरकार द्वारा पोषित विद्यालय बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं। उलग अलग स्थानों पर इनके शैक्षिक वातावरण के बारे में लोगों के भिन्न–भिन्न मत हैं। ऐसे में निजी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों एंव सरकार द्वारा पोषित माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन अति महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है।

इस शोध हेतु शोधकर्ती ने मेरठ नगर के चार अनुदानित अल्पसंख्यक गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों से 100–100 छात्र–छात्राओं को चुनकर उन विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का मापन किया। हालाँकि इस लघुशोध से प्राप्त निष्कर्ष सर्वमान्य नहीं कहे जा सकते, क्योंकि विद्यालयों का स्वरूप लगभग मिलता–जुलता सा था और प्रतिदर्श भी सीमित क्षेत्र में थे परन्तु फिर भी प्राप्त निष्कर्ष महत्वपूर्ण हैं। प्रस्तुत शोध से शोधकर्ती ने निष्कर्ष प्राप्त कियाकि अनुदानित अल्पसंख्यक और गैर अनुदानित अल्पसंख्यक माध्यमिक स्तर के विद्यालयों (सभी प्रकार के) के शैक्षिक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मुख्य शब्द–*शैक्षिक वातावरण, अनुदानित अल्पसंख्यक विद्यालय, गैरअनुदानित अल्पसंख्यक विद्यालय।*

प्रस्तावना

शिक्षा मानव सभ्यता और समाज का आधार होती हैं किसी भी व्यक्ति या समाज को देखकर हम उसकी शिक्षा व्यवस्था का आँकलन कर सकते हैं। शिक्षा ही समाज की दिशा निर्देशक, सुधारक एंव पथ प्रदर्शक होती है। समाज की आवश्यकतानुसार शिक्षा व्यवसाि का निर्धारण होता हैं किसी समाज का उद्देश्य उसकी शिक्षा के उद्देश्य में परिलखित होता हैं शिक्षा मे ंपरिवर्तन होता रहता है। भिन्न–भिन्न कालखण्डों में शिक्षा के उद्देश्य और शिक्षा की व्यवस्था तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होती रही है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति के अंतर्मन में उपस्थित अज्ञान के अंधकार का नाशकर उसे ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाती है। शिक्षा को कुछ शब्दों द्वारा परिभाषित करना उसकी व्यापकता को कम करना है।

समस्त शिक्षण प्रक्रिया में तीन चीजें शामिल होती हैं। शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम। इनमें से किसी एक की भी अनुपस्थिति शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित करती है तथा रोक सकती है। शिक्षण एक गतिशील सतत् प्रक्रिया है। यह अनवरत् तब तकचलती रहती है जब तक कि यह अपने उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर लेती। पूर्व में शिक्षा दिशा दार्शनिक आधार पर ही निर्धारित की जाती थी लेकिन मनोविज्ञान के उद्भव के बाद शिक्षण प्रक्रिया में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। शिक्षण प्रक्रिया में मनोवैज्ञानिक और सामाजिक आधार को महत्व मिला।

मनोविज्ञान के शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश से बालक की मनोवृत्तियों, सीखने की स्थितियों एंव आसपास के वातावरण आदि के शिक्षा का प्रभावों के अध्ययन को बल मिला। वातावरण व्यक्ति या बालक केआसपास उपस्थित सभी कारकों से मिलकर निर्मित होता है। शिक्षा से सम्बन्धित कारको से मिलकर शैक्षिक वातावरण का निर्माण होता है। बालक की सीखने की प्रक्रिया को शैक्षिक वातावरण बहुत प्रभावित करता है।

जिस प्रकार उचित प्राकर्षतिक वातावरण में कोमल कोपलें, सुसज्जित, स्वस्थ पत्तियों के रूप में विकसित होती है। उसी प्रकार शिशु भी स्वस्थ वातावरण में समुचित रूप से विकसिक होकर सामाजिक आधारशिक्षा के भव्य निर्माण में योगदान के लिए तत्पर होता हैं माता के गर्भ से ही शिशु और वातावरण में अंतः क्रिया प्रारम्भ हो जाती है जो शिशु के समस्त जीवनकाल तक चलती है।

वर्तमान समय में शिक्षा का क्षेत्र अति व्यापक हो गया हैं शिक्षा के नित नये आाम सर्षजित हो रहे हैं। सरकारी सहयोग एंव व्यक्तिगत प्रयासों द्वारा नवीन शिक्षा संस्थानों की स्थापना हो रही हैं। पूर्व में यह कार्य जितना कठिन था वर्तमान में उतना ही सरल हो गया है। शिक्षा का कोई भी स्तर इससे अछूता नहीं है। क्योंकि शिक्षा मानव समाज की मूल आवश्यकता है, इसलिए इस व्यवसायिक दौड़ को पूर्णतया गलत भी नहीं कहा जा सकता। समाज की इस दौड़ में बालक का समुचित विकास अति आवश्यक है। यह तभी संभव जब बालक को उचित पारिवारिक और शैक्षिक वातावरण मिले। विद्यालय का शैक्षिक वातावरण बालक के व्यक्तित्व विकास में महती भूमिका निभाता है। माध्यमिक स्तर पर निजी क्षेत्र के और सरकार द्वारा पोषित विद्यालय बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं। उलग अलग स्थानों पर इनके शैक्षिक वातावरण के बारे में लोगों के भिन्न–भिन्न मत हैं। ऐसे में निजी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों एंव सरकार द्वारा पोषित माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन अति महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है।

समस्या का कथन

''मेरठ नगर के माध्यमिक स्तर पर अनुदानित अल्पसंख्या एंव गैर अनुदानित अल्पसंख्यक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य

शोधकर्ती का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के अनुदानित अल्पसंख्यक और गैर अनुदानित अल्पसंख्यक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना है एंव परीक्षण के

आधार ऐसे विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में कोइ सार्थ अंतर है या नहीं, ज्ञात करना।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शोधकर्ती ने मेरठ नगर के माध्यमिक स्तर के चार अनुदानित अल्पसंख्यक और चार गैर अनुदानित अल्पसंख्यक विद्यालयों का चयन कर उसके शैक्षिक वातावरण का अध्ययन किया है।

शोधकर्ती ने इस अध्ययन के विशिष्टि उद्देश्यों का निम्न के वर्गो में वगीकृत किया है–

1. अनुदानित अल्पसंख्या और गैर अनुदानित अल्पसंख्यक मा० स्तर के बालक विद्यालयों के शिक्षिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।
2. अनुदानित अल्पसंख्यक और अनुदानित मा० स्तर के बालक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।
3. अल्पसंख्यक अनुदानित मा० स्तर के बालिका एंव बालक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।
4. अल्पसंख्यक गैर अनुदानित मा० स्तर के बालिका एंव बालक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।
5. अनुदानित और गैर अनुदानित विद्यालयों (बालक, बालिका सहशिक्षा) के शैक्षिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।

प्रस्तुत शोध की विधि

प्रस्तुत शैक्षिक शोध में सर्वेक्षण विधि अथवा वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध में शून्य परिकल्पना की अवधारणा का प्रयोग किया जाता है। इस परिकल्पना के आधार पर यह मानकर शोध किया गया है कि अनुदानित और गैर अनुदानिक मा० विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में कोई अन्तर नहीं होता है।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना निम्नवत् हैं–

1. अनुदानित अल्पसंख्यक और गैर अनुदानित अल्पसंख्यक स्तर के बालिका विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में कोई सार्थ अन्तर नहीं है।
2. अनुदानित अल्पसंख्यक और गेर अनुदानित अल्पसंख्यक मा० स्तर के बालक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. अल्पसंख्यक अनुदानित मा० स्तर के बालिका विद्यालयों एंव बालक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण मेंकोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. गैर अनुदानित अल्पसंख्यक मा० स्तर के बालिका एंव बालक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नपहीं है।
5. अनुदानित अल्पसंख्यक और गैर अनुदानित अल्पसंख्यक मा० स्तर के विद्यालयों (बालक, बालिका, सहशिक्षा) के शैक्षिक वातावरण में कोई सार्थक वातावरण में कोई अनतर नहीं है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध हेतु सर्वप्रथम मेरठ शहर के समस्त अनुदानित अल्संख्यक और गैर अनुदानित अल्संख्यक विद्यालयों कीसूची तैयार कर यदृच्छया 8 विद्यालयों, जिनमें चार अनुदानित अल्संख्यक और चार गेर अनुदानित अल्संख्यक हैं, का चयन किया गया है। अनुदानित और गैर अनुदानित अल्संख्यक विद्यालयों की सूची ही प्रस्तुत शोध की जनसंख्या है।

प्रस्तुत शोध की प्रतिदर्श चयन विधि

चूँकि सम्भाव्य प्रतिदर्श चयन विधि अपेक्षाकृत शुद्ध व त्रृटि रहित होती है। अतः शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध में Simple Random method का प्रयोग किया है।

प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी को मा० सतर के अनुदानित अल्पसंख्यक एंव गैर अनुदानित अल्पसंख्यक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का अध्ययन करना था जिसके लिए उसने मेरठ महानगर के 8 विद्यालयों जिसमें चार अनुदानित अल्पसंख्यक और चार गैर अनुदानित अल्पसंख्यक थे, का चयन किया। चार अनुदानित विद्यालयों में दो विद्यालय बालिका विद्यालय थे, दो विद्यासलय बालक विद्यालय थे। इसी तरह चार गेर अनुदानित अल्पसंख्यक विद्यालयों में 2 विद्यालय बलिका विद्यालय, दो विद्यालय बालकों का विद्यालय था।

प्रस्तुत शोध का प्रतिदर्श 200 का है जो अनुदानित अल्पसंख्यक और गैर अनुदानित अल्पसंख्यक मा० विद्यालयों के दो समूह में विभाजित है। छात्रों व छात्राओं का चयन उनकी कक्षा के आधार पर यिका गया है। समस्त प्रतिदर्श में 11वीं और 12वीं कक्षा के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया। प्रत्येक विद्यालय से 25 बच्चों को चुना गया।

प्रस्तुत शोध में प्रस्तुत उपकरण एंव उसका परिचय

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त प्रश्नावली एक प्रमापीकृत परीक्षण हैं प्रमापीकृत परीक्षण उस परीक्षण को कहते हैं जिसकी परीक्षण विधि, फलांकन विधि आदि निश्चित होते हैं। परीक्षण की प्रशासन विधि सभी व्यक्तियों के लिए एक सी होती हैं प्रमापीकृत परीक्षण में मानकों को भी निध ार्ारित किया जाता है। बिना मानकों के परीक्षण प्राप्ताँकों की व्याख्या नहीं की जा सकती है।

शोध में प्रयुक्त तालिका M.L. Shah और Anita Shah द्वारा निर्मित है जिसे Academic Climate De3scription questionnair (संक्षेप में ACDQ) कहते हैं। इस तालिका सेकिसी भी विद्यालय के शैक्षिक वातावरण के बारे में जानकारी मिलती है। यह प्रश्नावली भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल है।

इस प्रश्नावली में शैक्षिक वातावरण से सम्बन्धित कुल 84 प्रश्न है। प्रश्नावली के 8 पृष्ठों में ये 84 प्रश्न निहित है। ये प्रश्न विद्यालय के शैक्षिक वातावरण में विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित है। शैक्षिक वातावरण को कुल 4 पक्षों में विभाजित कर उनसे प्रश्न उठाये गये हैं। शैक्षिक वातावरण की ये चार विमायें निम्नलिखित हैं–

1. भौतिक सामग्री

2. अंतर वैयक्तिक विश्वास,
3. विद्यालय प्रबंधन
4. शैक्षिक प्रबन्धन

प्रश्नावली (ACDQ) का प्रशासन

शोधकर्ती ने प्रत्येक विद्यालय में सर्वप्रथम प्रधानाचार्य से मिलकर प्रदत्त संकलन हेतु अनुमति प्राप्त की। फिर निर्धारित समय पर कक्षा में पहुँचकर विद्यार्थियों से सम्पर्क किया। विद्यार्थियों को अपने उद्देश्य से अवगत कराया। कक्षा में पहुँचने से पूर्व शोधकर्ता ने कक्षाध्यापक की सहायता से उपस्थिति पंजिका में अंकित छात्रों में से 25 छात्रों का चयन लाटरी विधि द्वारा किया। प्रश्नावली में दिये निर्देशोंको उन्हें पढ़ने के लिए कहा और उनके संदेह का निराकरण किया। प्रश्नावली हल करने के लिए कोई समय सीमा नहीं है। फिर प्रत्येक विद्यालय में प्रदत्त संकलन हेतु यही विधि अपनाई गई। प्रत्येक विद्यालय से कक्षा 11 के 25–25 छात्रों को प्रतिदर्श हेतु चूना गया।

अंकीकरण (Scroring Procedure) : ACDQ का अंकीकरण बहुत ही सरल है। प्रश्नावली में कुल 84 प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर हेतु तीन विकल्प क्रमश (अ), (ब), (स) दिये हैं। अ–सकारात्मक कथन का प्रतिनिधित्व करता है, ब–तटस्थ कानि का प्रतिनिधित्व करता है तथा स–नकारात्मक कथन प्रतिनिधित्व करता है। सकारात्मक कथन (अ) हेतु 2 अंक, (ब) तटस्थ कथन हेतु 1 अंक तथा नकारात्मक कथन हेतु शून्य अंक प्रदान किय गये है। प्रत्येक छात्र को केवल एक विकल्प टिक (✓) करना होता है। किसी भी छात्र का अधिकतमअंक 168 तथा न्यूनतम शून्य हो सकता है।

उपर्युक्त विधि द्वारा प्रत्येक छात्र को अंक प्रदान किया एंव उसका योग ज्ञात किया। फिर उनको व्यवस्थित रूप में सारण बनाकर प्रस्तुत किया।

सांख्यिकीय गणना

मध्यमान, प्रामाधिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात की सहायता से समस्या के उद्देश्य को प्राप्त किया गया।

परिकल्पना के परीक्षण के लिए मध्यमान, प्रामाणिक विचलन ज्ञात किये गये तथा मध यमानों में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात ज्ञात करके निष्कर्ष निकाले गये।

सारणीयन

प्राप्त निष्कर्ष, जो शोध परिकल्पनाओं के आधार पर हैं सारणियों द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है।

सारणी संख्या – 1

अनुदानित अल्संख्यक और गैर अनुदानित अल्संख्यक माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण से सम्बन्धित तालिका–

विद्यालय	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रॉंतिक अनुपात
अनुदानित अल्संख्यक बालिका विद्यालय	127.58	7.27	0.37<1.96
गैर अनुदानित अल्संख्यक बालिका विद्यालय	128.28	10.70	असार्थक

सारणी 1 देखने पर ज्ञात होता है कि अनुदानित अल्पसंख्यक स्तर के बालिका विद्यालय की छात्राओं के प्राप्ताँकों के मध्यमान 128.28 से अनुदानित अल्पसंख्यक बालिका विद्यालय की छात्राओं के प्राप्तांकों के मध्यमान 128.28 से कम है।

दोनों वर्गो की विचलनशीलता क्रमशः 7.27 और 10.70 है। दोनों वर्गो की छात्राओं के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य अन्तर सार्थक नहीं है। क्योंकि प्राप्त क्राँतिक अनुपात 0.38 है जो 0.05 पैमाने के विश्वास स्तर के मान 1.96 से कम है। अतः यहाँ यह शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है कि ''अनुदानित अल्पसंख्यक और गैर अनुदानित अल्पसंख्यक माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

सारणी – 2

अनुदानित अल्पसंख्यक और गैर अनुदानित अल्पसंख्यक माध्यमिक स्तर के बालक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण से सम्बन्धित सारणी –

विद्यालय	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रॉंतिक अनुपात
अनुदानित अल्संख्यक बालिका विद्यालय	129.86	9.45	0.35<1.96
गैर अनुदानित अल्संख्यक बालिका विद्यालय	130.74	10.00	असार्थक

सारणी 2 देखने पर ज्ञात होता है कि दोनों वर्गो के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है क्योंकि प्राप्त क्राँतिक अनुपात 0.35 है जो 0.05 विश्वास स्तर के मान 1.96 से कम है।

अतः यहाँ यह शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है कि ''अनुदानित अल्पसंख्यक और गैर–अनुदानित अल्पसंख्यक माध्यमिक स्तर के बालक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में कोई सार्थक नहीं है।

सारणी – 3

अल्पसंख्यक अनुदानित माध्यमिक स्तर के बालिका एंव बालक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण से सम्बन्धित सारणी –

विद्यालय	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रॉतिक अनुपात
अल्संख्यक अनुदान्ति बालिका विद्यालय	127.58	7.25	0.76<1.96
अल्संख्यक गैर अनुदानित बालिका विद्यालय	129.86	9.45	असार्थक

सारणी देखने पर ज्ञात होता है कि दोनों वर्गो के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है क्योंकि प्राप्त क्रॉतिक अनुपात 0.76 है जो 0.05 विश्वास स्तर के मान 1.96 से कम है।

अतः यहाँ यह शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है कि ''अल्पसंख्यक अनुदानित माध्यमिक स्तर के बालिका एंव बालक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 4

गैर अनुदानित अल्पसंख्यक माध्यमिक स्तर के बालिका एंव बालक विलयों के शैक्षिक वातावरण से सम्बन्धित सारणी–

विद्यालय	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रॉतिक अनुपात
गैर अनुदानित अल्संख्यक बालिका विद्यालय	128.28	10.70	1.26<1.96
गैर अनुदानित अल्संख्यक बालक विद्यालय	130.74	10.00	असार्थक

सारणी देखने पर ज्ञात होता है कि दोनों वर्गो के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है क्योंकि प्राप्त क्रॉतिक अनुपात 1.26 है जो 0.05 विश्वास स्तर के मान 1.96 से कम है।

अतः यहाँ यह शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है कि ''गैर अनुदानित अल्पसंख्यक माध्यमिक स्तर के बालिका एंव बालक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

सारणी संख्या 5

अल्पसंख्यक अनुदानित और अल्पसंख्यक गैर अनुदानित (सभी प्रकार के) माध्यमिक स्तर के बालिका एंव बालक विलयों के शैक्षिक वातावरण से सम्बन्धित सारणी–

विद्यालय	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रॉतिक अनुपात
अल्पसंख्यक अनुदानित बालिका विद्यालय	127.12	8.57	1.87<1.96
अल्पसंख्यक गैर अनुदानित बालक विद्यालय	129.56	9.83	असार्थक

सारणी देखने पर ज्ञात होता है कि दोनों वर्गो के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है क्योंकि प्राप्त क्रॉतिक अनुपात 1.87 है जो 0.05 विश्वास स्तर के मान 1.96 से कम है।

अतः यहाँ यह शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है कि ''अल्पसंख्यक अनुदानित और अल्पसंख्यक गैर अनुदानित माध्यमिक स्तर के बालिका एंव बालक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

प्रस्तुत विवेचन से स्पष्ट है कि सरकार द्वारा पोषित एंव निजी प्रयासों द्वारा संचालित अल्पसंख्यक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। वर्तमान में शिक्षा व्यवस्था निजी हाथों में जाती हुई प्रतीत हो रही है। आज विद्यालय खोलने वाले अत्यधिक धन खर्च करके उच्च कोटि के विद्यालयों की आधारशिला रख रहे हैं।

मेरठ नगर की शिक्षा व्यवस्था इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। आज साधन सम्पन्न व्यक्ति द्वारा संचालित अत्याधुनिक सुविधायुक्त विद्यालयों की संख्या बहुत बढ़ गयी हैं सरकारी विद्यालय तो अपने उद्देश्य को पूर्ण कर रहे हैं। निजी विद्यालय उसके द्वारा दिये गये आधार पर उच्च शिखरों का प्रण्यन करते प्रतीत हो रहे है। अल्पसंख्यक वर्ग के द्वारा खाले गये अनेक शैक्षिक संस्थान शिक्षा के क्षेत्र में अपना निरंतर योगदान दे रहें हैं एंव अल्पसंख्यक वर्ग के शैक्षिक व सामाजिक जीवन स्तर में सुधान लाने हेतु सतत् प्रयासरत् है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से शोधकर्ता ने निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये।

1. माध्यमिक स्तर के अनुदानित अल्पसंख्यक और गेर अनुदानित अल्पसंख्यक बालिका विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. मा० स्तरी के अनुदानित अल्पसंख्यक और गैर अनुदानित अल्संख्यक बालक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नही है।

3. माध्यमिक स्तर के अनुदानित अल्पसंख्यक बालिका विद्यालयों और बालक विद्यालयों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. मा० सतर के गैर अनुदानित अल्पसंख्यक बालिका विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5. अनुदानित अल्पसंख्यक और गैर अनुदानित अल्पसंख्यक माध्यमिक स्तर के विद्यालयों (सभी प्रकार के) के शैक्षिक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

इस तरह शोध के लिए निर्मित की गई पाँचों शून्य परिकल्पना स्वीकृत हो गयी है। प्राप्त निष्कर्ष द्वारा शून्य परिकल्पना की पुष्टि हुई है।

प्रस्तुत शोध की उपयोगिता

किसी भी कार्य का महत्व उसकी उपयोगिता में निहित होता है। किसी कार्य या परिणाम की जितनी अधिक उपयोगिता होगी वह उतना ही महत्वपूर्ण होगा। प्रस्तुत शोध के संदर्भ में ऐसा ही है। किसी भी विद्यासलय का शैक्षिक वातावरण शिक्षण प्रक्रिया का महत्वपूर्ण कारक है। जिस विद्यालय का शैक्षिक वातावरण जिनता अच्छा होगा, उस विद्यालय की शिक्षण प्रक्रिया उतनी ही श्रेष्ठ होगी।

शिक्षा के क्षेत्र में मनोविज्ञान के प्रवेश से पाठ्यक्रम और शिक्षक के अतिरिक्त अन्य कारकों को भी महत्व मिला। शिक्षा का स्वरूप बाल केन्द्रित हो गया। शैक्षिक वातावरण सुधारने के लिए नये–नये विचारों और विधियों का प्रयोग किया गया।

किसी विद्यालय का शैक्षिक कैसा है ? क्या उसके वर्तमान स्वरूप में और सुधार सम्भव है ? सुधान सम्भव है तो कैसे ? यह प्रस्तुत शोध के अध्ययन से ज्ञात होता है। बच्चों के साथ विद्यालय में कैसा व्यवहार होना चाहिए, पाठ्य सहगामी क्रियायें किसी प्रकार संचालित की जायें जिससे बालकों का पूर्ण विकास किया जा सकता है आदि के अध्ययन में यह शोध महत्वपूर्ण हो सकता है।

अध्ययन की परिसीमायें

कोई भी अध्ययन अपने आप मे पूर्ण नहीं होता क्योंकि सभी की कोई न कोई सीमा निश्चित होती है। प्रस्तुत शोध के विषय में ऐसा ही कुछ है। शोध कर्ता ने शोध के लिए समर्पित भाव से प्रयास किया लेकिन धन और समय के अभाव ने नियंत्रित किये रखा।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ती ने माध्यमिक स्तर के चार अनुदानित अल्पसंख्यक चार गैर अनुदानित अल्पसंख्यक विद्यालयों, जो कि मेरठ नगर में स्थित है, से 200 प्रतिदर्श का चयन कर इस कार्य हेतु प्रयुक्त किया। शोधकर्ती ने बहुत बड़ें क्षेत्र का चयन नहीं किया न ही बहुत बड़े प्रतिदर्श का क्योंकि धन और समय के अभाव का उसे आभास था।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 *मापन, मूल्यांकन एंव सांख्यिकी* –लाल साहब सिंह, साहित्य प्रकाशन, आगरा, 2002।
2 *अनुसंधान विधियाँ*, डी०एन० श्रीवास्तव, साहित्य प्रकाशन, आगरा, 2006।
3 *शिक्षा अनुसंधान,* आर० ए० शर्मा आर० लाल बुक डिपो, मेरठ, 2014।
4 *शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व,* ए०पी० सुखिया, मेहरोत्रा एंव मेहरोत्रा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1998।
5 *अनुसंधान विधियाँ*, डा०एच०के० कपिल, हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशक, कचहरी घाट, आगरा,1996–97।
6 *आधुनिक मापन तथा मूल्यांकन,* डा० एस०पी० गुप्ता, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2013।
7 *शिक्षा मनोविज्ञान*, डा० अरूण कुमार सिह, बी०बी० प्रिन्टर्स, पटना, 2012।
8 *शिक्षा के दार्शनिक और समाज शास्त्री सिद्धान्त* – रमन बिहारी लाल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, शिवाजी रोड, मेरठ, 2007।
9 *शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त*– जी०एस०डी० त्यागी एंव पी०डी० पाठक, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2009
10 एम०वी० बुच के *शैक्षणिक शोध सर्वेक्षण* –प्रथम से पंचम संस्करण।
11 एम०एल० शाह एंव अमिता शाह द्वारा निर्मित *शैक्षिक वातावरण प्रश्नावली* (ACDQ) का Manual।